गोआका प्रश्न

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक २८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १० सितम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

हम युद्धका आश्रय नहीं लेंगे

[प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरूके अुत्तरप्रदेश कांग्रेस कमेटीके सम्मुख सीतापुरमें २१ अगस्तको दिये गये भाषणकी पत्रोंमें छपी रिपोर्टका सार नीचे दिया गया है।]

"हम शांति चाहते हैं लेकिन किसी भी हालतमें हम युद्ध करेंगे ही नहीं, अैसी कोअी प्रतिज्ञा मैंने या हमारी सरकारने नहीं ली है। अगर हमारे देश पर आक्रमण हुआ, तो हम अपनी सारी ताकत लगाकर अुसकी रक्षा करेंगे और अुसके लिअे अपनी सेनाओंका अुपयोग भी करेंगे। लेकिन अिसके सिवा किसी भी दूसरी परिस्थितिमें हम युद्धका आश्रय नहीं लेंगे।"

प्रधानमंत्रीने कहा, "आजादीके बादसे ही अपनी घोषित नीतिके अनुसार पुर्तगाली सरकारके साथ शांतिपूर्ण समझौता करनेकी हमने पूरी कोशिश की है। लेकिन अुसने हमारी कोशिशोंकी अुपेक्षा की है, हमें दुतकारा है, और अिस सवाल पर बातचीत तक करनेसे अिन्कार किया है। अिसी अुद्देश्यसे हमने वहां अपना दूतावास स्थापित किया था, लेकिन हमें अुसे वापिस हटा लेना पड़ा, क्योंकि अुसका कोअी अुपयोग न था। पुर्तगाली सरकारने हमारा कअी बार अपमान किया है और गोआमें अुसका शासन अत्यंत क्रूर और निष्ठुर है, किन्तु अिसके बावजूद हम अपनी शान्तिकी नीतिका पालन करते रहे हैं।"

प्रधानमंत्रीने कहा कि पहला सवाल, जिसके बारेमें हमें स्पष्ट निश्चय कर लेना चाहिये, यह है कि "अिस मामलेमें हमें, जैसा हम करते आये हैं अुसी तरह, शान्तिपूर्वक व्यवहार करते रहना चाहिये या कि हमें सैनिक अुपायोंका, या जिसे पुलिस कार्रवाअी कहा जाता है, अुसका आश्रय लेना चाहिये।"

"हमें निश्चय है कि शान्तिका तरीका ही सही है, केवल गोआ और भारतकी दृष्टिसे ही नहीं, बल्कि दुनियाके ज्यादा बड़े सवालों और अपनी अुस विदेश-नीतिकी दृष्टिसे भी जिसका हम काफी सफलताके साथ पालन कर रहे हैं। अिस शान्तिपूर्ण तरीकेके पालनसे हमें पाण्डिचेरीमें अनुकूल फल प्राप्त हुआ और आज हम और फ्रांस अच्छे मित्र हैं। सैनिक शक्तिके जरिये गोआ पर अधिकार कर लेना हमारे लिअे आसान है, लेकिन वैसा करनेका मतलब जिन आदर्शोंकी हम घोषणा करते आये हैं अुनका परित्याग करना होगा। अिसके सिवा गोआके निवासियोंके साथ अिसमें न्याय नहीं होगा। हम युद्ध या युद्ध-जैसी बातोंके जरिये समस्याओंके समाधानके खिलाफ रहे हैं और हम अपने अिस निश्चय पर अडिग रहना चाहते हैं।"

अुन्होंने आगे कहा, "अगर यह ठीक है तो फिर हमें बिना सोचे-समझे 'पुलिस कार्रवाअी' या अिस तरहकी दूसरी बातोंकी चर्चा नहीं करना चाहिये। अैसी बातें हमारी नीति, हमारे सिद्धान्तों और हमारी प्रतिष्ठाके अनुकूल नहीं हैं। अगर कुछ लोग अैसा समझते हैं कि हम अिस सवालको शान्तिपूर्ण अुपायोंसे हल नहीं कर सकते, तो फिर अुन्हें कुछ अवसरों पर युद्धकी आवश्यकताको भी मानना होगा। अुस स्थितिमें सवाल यह होगा कि अमुक अवसर युद्ध करने-जैसा है, अिस बातका निश्चय कौन करेगा। हरअेक देश खुद ही अिस बातका निर्णय करने लगे, तो युद्धोंकी बाढ़का दरवाज़ा खुल जायगा। अैसा नहीं समझना चाहिये कि छोटा-मोटा युद्ध तो अुचित है, लेकिन बड़ा युद्ध अनुचित है। अगर हम अेक बार सिद्धान्त छोड़ दें, तो फिर अपनी जगह मजबूतीसे खड़े रहका हमारा सहारा छिन जाता है; फिर हम दुनियामें शान्तिकी स्थापनाके लिअे, जो कि मानव-जातिके भविष्यके लिअे अितनी जरूरी है, काम नहीं कर सकते।"

(अंग्रेजीसे)

जवाहरलाल नेहरू

गोआका स्वातंत्र्य-युद्ध और गांधीजी

[गोअन यूथ लीगके दो प्रतिनिधि महात्मा गांधीसे ३ जुलाअी, १९४६ को मिले थे। अुन्होंने गोआके स्वातंत्र्य-युद्धके बारेमें गांधीजीसे जो प्रश्न पूछे थे, अुनके अुन्होंने नीचे लिखे अुत्तर दिये थे। आजकल गोआकी स्वतंत्रताके लिअे जो आन्दोलन चल रहा है, अुसे दृष्टिमें रखते हुअे ये प्रश्नोत्तर दिलचस्प मालूम होंगे। ये १५ अगस्त, १९५५ के अेo आअीo सीo सीo के 'अिकॉनामिक रिव्यू' से यहां अुद्धृत किये जाते हैं।]

प्र० — फिलहाल पुर्तगाली साम्राज्यवादके खिलाफ हमारी लड़ाअी नागरिक स्वतंत्रतायें प्राप्त करनेके लिअे है। अिसलिअे हमें किस प्रकारका सत्याग्रह करना चाहिये?

अु० — आपको नागरिक स्वतंत्रताओं पर होनेवाले हरअेक हमलेका सामना सविनय आज्ञाभंग द्वारा करना होगा। लेकिन अिससे पहले आपको स्पष्ट समझाना चाहिये कि कौन कौनसी नागरिक स्वतंत्रताओंके लिअे आप लड़ रहे हैं। आप अैसी किसी चीजकी मांग नहीं कर सकते, जिसके लिअे आपको नैतिक अधिकार नहीं है। अिसके सिवा, आपका आन्दोलन पूरी तरह अहिंसक होना चाहिये।

प्र० — पुर्तगाली सरकारका औपनिवेशिक शासनतंत्र सभाओंके लिअे पहलेसे अिजाजत लेना जरूरी ठहराता है, लेकिन हम बिना सूचना दिये भी सभायें करनेका अधिकार चाहते हैं।

अु० — बिना सूचना दिये सभायें करनेका आपको पूरा अधिकार होना चाहिये। कोअी भी स्वाभिमानी मनुष्य अैसी किसी बातके करनेमें डाली जानेवाली रुकावटको सहन नहीं कर सकता, जो नैतिक दृष्टिसे न्यायपूर्ण है। हम स्वतंत्र मनुष्य हैं और हम शांतिपूर्ण ढंगसे सभायें करना चाहते हैं। अिसके लिअे हम पहलेसे कोअी सूचना नहीं दे सकते। अिसलिअे बिना सूचना दिये आपको सभायें करनी चाहिये।

www.vinoba.in

प्र० — मान लीजिये हम सभा बुलाते हैं, लोगोंके सामने भाषण देते हैं और गिरफ्तार कर लिये जाते हैं, लेकिन बादमें पुलिस हमें किसी निश्चित दिन फिर हाजिर होनेकी बात कह कर छोड़ देती है, तो क्या हमें पुलिसकी यह बात मंजूर करनी चाहिये? अथवा हमें पुलिस अहाता छोड़नेसे अिन्कार कर देना चाहिये, या बाहर आ जाना चाहिये और अुनके लगाये प्रतिबन्धोंको फिरसे तोड़ना चाहिये?

अु० — जिस पुलिसको आपको गिरफ्तार करनेका अधिकार है, अुसे आपको छोड़ देनेका भी अधिकार है। अिसलिअे आपको बाहर जाने दिया जाय तो आपको चले जाना चाहिये। आपको पुलिससे अपनेको हिरासतमें रखनेका आग्रह नहीं करना चाहिये। लेकिन अेक बार बाहर निकल जानेके बाद आप फिर प्रतिबन्धको तोड़ सकते हैं। अगर पुलिसके सामने फिरसे हाजिर होनेका कोअी दिन निश्चित कर दिया जाय, तो अेक सभ्य मनुष्यके नाते अैसा करना आपका फर्ज है।

प्र० — जब कोअी सत्याग्रही गिरफ्तार किया जाय, तब लोगोंको कैसा व्यवहार करना चाहिये?

अु० — अगर कोअी सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिया जाय, तो किसी तरहका प्रदर्शन या गड़बड़ी नहीं होनी चाहिये। लोगोंको पूर्ण शान्ति रखनी चाहिये और व्यक्तिगत रूपमें या सामूहिक रूपमें गिरफ्तार होनेकी तयारी दिखानी चाहिये। किसीके गिरफ्तार किये जाने पर हड़ताल या अैसी ही कोअी दूसरी बात करनेकी मैं हिमायत नहीं कर सकता। अन्तमें आपको जानना चाहिये कि सत्याग्रही स्वेच्छासे गिरफ्तारीको न्योतता है, अिसलिअे अगर लोग कुछ करना ही चाहते हैं, तो अुन्हें सत्याग्रहीके अुदाहरणका अनुकरण करना चाहिये। जहां तक प्रदर्शन वगैराका सम्बन्ध है, वे बादमें आयेंगे।

प्र० — प्रेसकी पूर्व-जांचके नियमको कैसे तोड़ा जाय?

अु० — अिसका अमल सचमुच कठिन है, लेकिन मैं अिसके दो हल बता सकता हूं।

पहला यह है, जिस पर मैंने दक्षिण अफ्रीकामें अमल किया था। अिसमें हस्तलिखित बुलेटिन निकाले जायं, जिन्हें स्वयंसेवक खुले आम बेचें। अिन बुलेटिनोंमें सरकारका भंडाफोड़ करनेवाले और अुसके कानूनकी अवज्ञा करनेवाले समाचार होने चाहिये। अगर लिखनेवाले लोग प्रत्येक बुलेटिनके नीचे अपने पूरे नाम लिख दें तो ज्यादा अच्छा होगा। और आपमें से बहुतसे लोग मिलकर काम करें, तो बहुतसी प्रतियां निकालना कठिन नहीं होगा। अगर सरकार सम्बन्धित लोगोंको गिरफ्तार कर ले तो दूसरे यह काम जारी रख सकते हैं।

दूसरा हल यह है कि बाहरसे छपी सामग्री प्राप्त करके खुले आम बांटी जाय।

प्र० — संस्थाओं पर लगाया गया प्रतिबन्ध कैसे तोड़ा जाय?

अु० — जितनी चाहें अुतनी संस्थायें खोलिये और अुनके नाम पर काम करना शुरू कर दीजिये।

प्र० — अगर सरकार गोलीबार वगैरा करे तो लोगोंको क्या करना चाहिये?

अु० — अैसी घृणास्पद परिस्थितियोंमें जीवित रहनेके बजाय बहादुरीसे मर जाना ज्यादा अच्छा है। लोग सरकारसे कह दें: "अच्छा, हम पर गोली चलाओ!"

प्र० — जब किसी सत्याग्रहीको यातनायें पहुंचाअी जायं, तब वह अपनी निष्ठा और साहसको कैसे कायम रखे?

अु० — सत्याग्रहीको कभी पीछे नहीं हटना चाहिये। अुसे हर तरहकी यातनायें बहादुरीसे सहनी चाहिये।

प्र० — गोआका कैथोलिक चर्च अगर पुर्तगाली शासकोंके हाथमें दमनका सक्रिय साधन बन जाय, तो सत्याग्रहीका अुसके प्रति क्या रुख होना चाहिये?

अु० — धर्मको अिस आन्दोलनसे अलग रखा जाय तो ज्यादा अच्छा होगा। लेकिन अगर वह सचमुच अत्याचारियोंके हाथका खिलौना बन जाय, तो आपका कर्तव्य हो जाता है कि आप अुसका विरोध अुसी तरह करें, जिस तरह आप किसी दमनकारी हुकूमतका विरोध करेंगे। लेकिन अुसका विरोध अुसी हद तक कीजिये, जिस हद तक वह आपके ध्येयकी सिद्धिमें बाधक बनता है।

पूछे गये सारे प्रश्नोंका अुत्तर देनेके बाद महात्मा गांधीने कहा: "अब मैंने आपके सारे प्रश्नोंके अुत्तर दे दिये हैं। मैं चाहता हूं कि आप अपनी हिम्मत दिखायें और आन्दोलनको शिथिल बनकर खतम न हो जाने दें। अगर लोग त्याग करनेके लिअे तैयार न हों, तो किसी अकेले आदमीको ही — जिसे लगता है कि अन्यायका विरोध करना चाहिये — अनुयायियोंकी प्रतीक्षा किये बिना त्यागके लिअे तैयार हो जाना चाहिये। आप जेलमें सड़ते रहें; दूसरोंकी आंखें कभी न कभी जरूर खुलेंगी।

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो अैसे अमानुषिक कानूनोंको तोड़े बिना अेक क्षण भी गोआमें नहीं रहता।"

गांधीजीसे बिदा मांगनेसे पहले हमने अुनके आशीर्वाद चाहे। अुन्होंने कहा: "आपके अिस आन्दोलनको मेरे हार्दिक आशीर्वाद हैं। मैं आपको वचन देता हूं कि अिस बातके लिअे मैं अपना सारा प्रभाव लगा दूंगा कि कांग्रेस गोआके प्रश्नमें रस ले और गोआ भारतके नकशे पर आ जाय। केवल आप साहस दिखाअिये, साहसकी मैं कदर और तारीफ करता हूं।"

(अंग्रेजीसे)

युद्ध और शांति-कालमें सेनाके कार्य

लेफ्टिनेंट जनरल के० अेस० तिम्मैयाने — जिन्होंने कोरियन संधि-वार्तामें अपनी कार्यकुशलताके कारण अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की है — अभी कुछ दिन पहले बम्बअीमें 'प्रोग्रेसिव ग्रूप' नामके अेक मण्डलके सामने भाषण देते हुअे शांति-कालमें सेनाके कार्य पर अपना मत प्रगट किया। अुसमें अुन्होंने अेक बात यह कही कि जब युद्ध होता है, तब तो सेना लड़नेका काम करती ही है, लेकिन युद्ध नहीं हो रहा होता और शान्ति होती है, तब वह लड़नेके लिअे अपनेको योग्य बनानेका काम करती है। अिसलिअे अगर अुन्हें अैसे कार्योंमें लगाया जाय जिससे अुनकी कवायद-कसरत आदि तैयारी-सम्बन्धी काममें बाधा आती हो तो अुनकी अपनी विशेष कार्य-क्षमतामें कमी आयेगी, खासकर अिसलिअे कि हमारी प्रतिरक्षा-सम्बन्धी आवश्यकताओंकी दृष्टिसे अुनकी संख्या कम-से-कम जितनी होनी चाहिये अुतनी ही है। हम मानते हैं कि श्री तिम्मैयाका मतलब यह नहीं था कि बाढ़ या अकाल जैसी राष्ट्रीय विपत्तियोंके अवसरों पर भी सेनाको सहायताके लिअे नहीं बुलाना चाहिये। तो फिर शान्ति-कालमें जिन कार्योंमें सामान्यतः सेनाका अुपयोग अुनके मतानुसार नहीं होना चाहिये, वे कार्य क्या हैं? अुदाहरणके लिअे, सरकार अिन दिनों सिंचाअीकी बड़ी-बड़ी योजनाओंको कार्यान्वित कर रही है। लोगोंसे अपेक्षा की जाती है कि वे अिन कार्योंके लिअे बड़ीसे बड़ी संख्यामें श्रमदान अर्पित करें। सेनाको अैसे कार्य व्यवस्थापूर्वक और जल्दी करनेकी तालीम प्राप्त है; तो अुसे लोगोंके द्वारा दिये जानेवाले अिस श्रमदानके दिग्दर्शन और नियंत्रणका कार्य सौंपा जा सकता है या नहीं? बेकार पड़ी हुअी श्रमशक्तिको अुपयोगी राष्ट्रीय कार्योंमें नियोजित करना चाहिये, अिस तरहकी बात आजकल बहुत होती है। लेकिन संघटन और अनुशासनकी कमीके कारण अुसमें बहुत-सा श्रम बेकार जाता है और

www.vinoba.in

काम अच्छा नहीं होता। अिस कमीको दूर करनेका यह महत्त्व-पूर्ण काम हमारी सेनाके करने जैसा है, अलबत्ता अुसे हमारे सामान्य स्त्री-पुरुषोंके साथ हिलमिलकर तथा सादगी और नम्रतापूर्वक काम करना पड़ेगा। अगर हम यह आशा रखते हैं कि किसी दिन युद्ध बिलकुल बन्द हो जायंगे, तो हमें यह भी समझ लेना होगा कि बाअिबिलकी अुक्तिके अनुसार हम अपने लड़ाअीके सारे हथियारोंको खेतीके औजारोंमें बदल सकें या नहीं, लेकिन हमारी सेनाको शान्ति और अुत्पादनके कुदाली और हल जैसे औजारोंका अुपयोग करना जरूर सीख लेना होगा; अुसे केवल युद्ध-क्षेत्रकी सेना ही नहीं, शान्ति-कालमें हमारी भूमि-सेना भी बननी होगा। हां, यह काम अुसे अिस तरह करना होगा कि अुसके कवायद-कसरत-सम्बन्धी सामान्य कार्यक्रममें कोअी विघ्न न पड़े।

२९-८-'५५ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

नौजवानोंमें अनाचार

बम्बअीसे अेक भाअी लिखते हैं:

"ता० ८-८-'५५ के 'मुम्बअी समाचार' में नीचेके समाचार पहले पृष्ठ पर छपे हैं: 'चौपाटी और हेंगिंग गार्डन पर स्त्रियोंको छेड़नेके अपराधमें ३३ आदमी पकड़े गये'। अिस बार अिन नौजवानोंमें अधिकतर अूंचे वर्गके घरोंके लड़के थे। 'पकड़े गये लोगोंमें अेक ग्रेज्युअेट और अेक डबल ग्रेज्युअेटका समावेश होता है'।

"मुझे याद है कि पिछली लड़ाअीके दिनोंमें अेक गोरे सैनिकने किसी स्त्रीकी छेड़खानी की थी। अुस समय वापूजीने तत्कालीन वाअिसरॉयको शिकायतका अेक कड़ा पत्र लिखा था। १९३६ से हमारे देशमें प्रान्तीय स्वराज्य मिला था। पहले शिक्षामंत्री बालासाहब खेर थे। अुसे २० बरस हो चुके हैं, लेकिन अभी भी हम जनताके मानसको सुधार नहीं सके हैं। जो काम अज्ञान दूर करनेसे होता है, वह काम आज पुलिसको करना पड़ता है। आज हमारे देशमें अपना राज्य है, जीवन-मान अूंचा अुठानेके प्रयत्न हो रहे हैं। अैसे समय शहरोंमें यदि हमारी मां-बहनोंकी छेड़खानी की जाय, तो अिसका अर्थ यह होता है कि हमारा जीवन-मान नीचे गिर रहा है। स्वतंत्रताके बदले स्वच्छन्दता बढ़ रही है। मराठीमें अेक कहावत है, 'गढ़ आया लेकिन सिंह गया'। अुसी तरह आज हमारा राज्य तो आया लेकिन हमारी आत्मा चली गअी।"

अिसी तरहकी शिकायत अहमदाबादमें भी अमुक हद तक हो रही है। पता चला है कि रास्तों पर ही नहीं, कालेजके वर्गोंमें और अध्यापकोंकी नजरके सामने विद्यार्थी विद्यार्थिनियों पर 'बाण' मारते हैं और तरह तरहसे अुन्हें छेड़ते हैं। पढ़नेवाले जगत्के 'लड़कों' में आज अैसी बातें जोर पकड़ती जा रही हैं।

अिसका कारण क्या है? अिसका कारण सिनेमा और अुपन्यास-सृष्टि हो तो आश्चर्य नहीं। ये दोनों चीजें नौजवानोंके मन पर खूब सवार हो गअी हैं। और पढ़ाअीमें कोअी विद्या-तेज नहीं रहा। अुससे अैसा मानसिक अनुशासन या कठोर नियमन नहीं पैदा होता, जो अिस तरहके नैतिक पतन और सड़ांधको रोके। अिसके सिवा, समाजके शहरी जीवनमें तथा अुद्योग-धन्धोंसे सम्बन्धित व्यवहारमें धर्मभीरुता या प्रामाणिकताकी मात्रा अितनी कम हो गअी है कि धर्मकी ढाल और संयमकी संस्कारिता भी नौजवानोंको कोअी मदद नहीं पहुंचाती। अिस कारण सारी चीज पुलिसके हाथोंमें चली जाती है। यह हमारे संस्कारबलकी हद बताता है, अिस प्रकारकी पत्रलेखककी शिकायत अत्यंत करुण कही जायगी। शिक्षाकार और धर्मनायक अिस प्रश्न पर विचार करके शिक्षा और धर्ममें आज जो जड़ता और दंभ आ गया है, अुसे दूर करनेका प्रयत्न करें, तो ही समाजमें सदाचार बलकी स्थापना हो सकती है। आज केवल आर्थिक दृष्टिसे देशकी विकास-योजनाओंका जो विचार किया जाता है, अुसका भी हमारे नैतिक मानस पर अच्छा असर नहीं पड़ता।

(गुजरातीसे) **मगनभाई देसाई**

भाषायें और भारतीय अेकता

अेक अनुकरणीय अुदाहरण

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके वाअिस-चान्सलर डॉ० पी० रामस्वामी अय्यरने पिछले मंगलवार भारतीय भाषा संगम नामक अेक संस्थाका अुद्घाटन किया। अिस संस्थामें अैसे प्रत्येक आदमीको तामिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली, मराठी और गुजराती भाषाकी शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया गया है, जो ये भाषायें सीखना चाहता है। यह आरंभ अिस विश्वासके आधार पर किया गया है कि राष्ट्रीय अेकता और संगठनके लिअे यह बहुत आवश्यक है कि भारतका प्रत्येक नागरिक अपने प्रदेशसे भिन्न प्रदेशों और संस्कृतियोंके बारेमें कुछ न कुछ ज्ञान प्राप्त करे। यह विश्वास अितनी बार और अितने लोगों द्वारा प्रकट किया जाता है कि यह आश्चर्यकी ही बात है कि अधिक लोगोंको अिस विषयमें कोअी ठोस कदम अुठानेकी बात क्यों नहीं सूझी। और किसी प्रजाके मानस और संस्कृतिको जाननेका अुसकी भाषा और साहित्यसे बढ़कर दूसरा कोअी साधन नहीं है।

जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं, यह थोड़े आश्चर्यकी बात है कि हमारे विश्वविद्यालय चीनी, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन और दूसरी विदेशी भाषाओंके वर्ग खोलनेमें तो अेक-दूसरेसे होड़ लगाते हैं, लेकिन भारतकी प्रादेशिक भाषायें सिखानेके लिअे वर्ग शुरू करनेकी बात शायद ही किसीको सूझती है। कमसे कम तामिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी और गुजरातीमें ही डिप्लोमा कोर्स शुरू किये जायें, जिनकी शिक्षा भारतीय भाषा संगमने शुरू की है, और केन्द्रीय तथा दूसरे पब्लिक सर्विस कमीशन यह घोषणा कर दें तो अच्छा हो कि शासन-सम्बन्धी नौकरियोंके लिअे अैसे अुम्मीद-वारोंको तरजीह दी जायगी, जो अेकसे अधिक भारतीय भाषायें जानते होंगे।

[यह अिलाहाबादके अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' के ता० २७-८-'५५ के अंकमें छपे सम्पादकीय लेखसे दिया गया है। 'हरिजन' सदासे भारतीय विश्वविद्यालयोंमें अिस सुधारकी हिमायत करता रहा है। हमारी महान भारतीय भाषाओंका पारस्परिक और आदर-पूर्ण अध्ययन करके तथा आन्तर-प्रान्तीय और अखिल भारतीय व्यवहारके लिअे हिन्दीका ज्ञान प्राप्त करके ही भारतकी अेकता सिद्ध की जा सकती है और अुसे मजबूत बनाया जा सकता है। भगवान करे हमारे शिक्षा-मंत्रालय और विश्वविद्यालय अिस चीजको समझें और अिसके अनुसार शिक्षाका पुनर्गठन आरंभ करें।

२-९-'५५ —म० प्र०]

(अंग्रेजीसे)

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी

[दूसरा संस्करण]

लेखक: गांधीजी; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-६-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१० सितम्बर १९५५

गोआका प्रश्न

२१ अगस्त, १९५५ को अुत्तरप्रदेश कांग्रेस कमेटीके सदस्योंके सामने भाषण देते हुअे श्री जवाहरलाल नेहरूने सीतापुरमें कहा कि शांतिपूर्ण तरीके अधिक समय लेते दिखाअी देते हैं, लेकिन मेरा विश्वास है कि अन्तमें वही सबसे ज्यादा व्यावहारिक सिद्ध होते हैं और आन्तर-राष्ट्रीय सम्बंधोंका अधिक अूंचा स्तर पेश करते हैं।

श्री नेहरूने कहा, "हमारे सामने गोआके खिलाफ आर्थिक कदम अुठानेका रास्ता खुला है, हमने बहुतसे कदम अुठाये हैं तथा हम और भी ज्यादा अुठा सकते हैं। हम दूसरे प्रकारके कदम भी अुठा सकते हैं, जिन पर सावधानीसे विचार करना होगा।" ये सब शांतिपूर्ण कदम हैं। ये शक्तिशाली हथियार हैं, हालांकि वे अेकदम कोअी नतीजा नहीं लाते।

अुन्होंने कहा कि भारतमें भी गोआके प्रश्न पर काफी भ्रमपूर्ण विचार फैला हुआ है और कुछ विदेशोंमें तो यह भ्रम या शायद जान-बूझकर पैदा की हुअी गलतफहमी भारतसे भी ज्यादा पाअी जाती है। "मुझे कुछ विदेशी आलोचनाअें पढ़कर बड़ा आश्चर्य हुआ है, क्योंकि वे अुसी पुराने औपनिवेशिक मानसके कायम रहनेकी सूचक हैं जिसने अेशिया और अफ्रीकाको अितना नुकसान पहुंचाया है। हम अिस भ्रमको दूर करनेका प्रयत्न करें और हकीकतोंको स्पष्ट रूपमें देखें।"

"गोआमें हमारा क्या लक्ष्य है? गोआ भौगोलिक दृष्टिसे भारतका अेक हिस्सा है। हम दुनियामें हर जगह अुपनिवेशवादका विरोध करते हैं, अिसलिअे भारतके अेक छोटेसे भागमें औपनिवेशिक शासनको बरदाश्त करना हमारे लिअे असंभव है। गोआके लिअे हमें कोअी लोभ नहीं है। वह छोटासा भूभाग अगर भारतमें मिल जाता है, तो अुससे अिस विशाल देशमें कोअी बड़ा फर्क नहीं पड़ जाता। लेकिन विदेशी औपनिवेशिक शासनके मातहत रहनेवाला अेक छोटासा टुकड़ा भी जरूर फर्क पैदा कर देता है और वह भारतके स्वाभिमान और राष्ट्रीय हितोंके लिअे हमेशाका खतरा है। वह अैसी हालतमें विशेष करके खतरेका साधन बन जाता है, जब पुर्तगाल जैसे शत्रुताका भाव रखनेवाले प्रतिगामी देशकी अुस पर हुकूमत हो।"

प्रधानमंत्रीने कहा, "गोआके लोग कौन हैं? वे हमारे ही लोगोंमें से हैं। पुर्तगाली जनगणनाके अनुसार अुनमें दो प्रतिशत लोग भी अैसे नहीं हैं, जिनकी मातृभाषा पुर्तगाली हो। बाकीके लोग वंशसे, नसलसे, भाषासे और अन्य कअी दृष्टियोंसे भारतीय हैं। अुनमें से लगभग दो-तिहाअी लोग हिन्दू हैं और अेक-तिहाअी लोग कैथोलिक अीसाअी हैं। भारतके बाकीके भागमें लाखों रोमन कैथोलिक अीसाअी हैं, जो अुतने ही भारतीय हैं जितने कि भारतके अन्य लोग। गोआका आर्थिक जीवन अनिवार्य रूपमें भारतके साथ जुड़ा हुआ है। अतः हमारे लिअे यह स्वाभाविक है कि हम गोआके लोगोंके साथ अेकताकी भावना अनुभव करें और विदेशी औपनिवेशिक हुकूमतमें हो रहे अुनके दमनके कारण हमें दुःख हो।"

"लेकिन," श्री नेहरूने कहा, "हम गोआके लोगोंकी अिच्छाके विरुद्ध अपने-आपको अुन पर लादना नहीं चाहते। अन्तमें चुनाव तो अुन्हींको करना है। हमें विश्वास हो गया है कि गोआके ८० से ९० प्रतिशत लोग पुर्तगाली शासनसे मुक्त होना चाहते हैं और भारतके साथ अधिक गहरा सम्बन्ध कायम करना चाहते हैं। अिसलिअे मुख्य बात है पुर्तगाली शासनसे मुक्ति और भारतसे अुपनिवेशवादके अिस अंतिम चिन्हको मिटाना। हमने गोआके लोगोंको यह वचन दिया है कि अपना भविष्य वे स्वयं निश्चित कर सकते हैं; अुनके धर्म, भाषाओं और रीत-रिवाजकी रक्षाके बारेमें भी हमने अुन्हें विश्वास दिलाया है।"

श्री नेहरूने कहा, "दुर्भाग्यकी बात तो यह है कि गोआके लोगोंको अपनी राय भी जाहिर नहीं करने दी जाती। पुर्तगालियोंने वहां पुलिस राज्य खड़ा कर दिया है। और अुनके खिलाफ जो लोग जरा भी अपनी राय जाहिर करते हैं अुन्हें जेलकी लम्बी-लम्बी सजायें दी जाती हैं। पुलिसकी अिजाजतके बिना वहां धार्मिक सभा-सम्मेलन भी नहीं किये जा सकते। अगर गोआके लोगोंको वाणीकी स्वतंत्रता और थोड़ी भी नागरिक स्वाधीनता होती तो कोअी कठिनाअी नहीं रहती।"

प्रधानमंत्रीने आगे कहा कि प्रश्न भारतका गोआ पर अपने-आपको लादनेका नहीं, बल्कि गोआनी लोगोंकी आजादीका और पुर्तगालकी औपनिवेशिक हुकूमतका खात्मा करनेका है। गोआकी समस्या हमारे सामने कअी बरसोंसे खड़ी है और हालकी कुछ घटनाओंने हमारे लोगोंको क्रोध और विरोधकी भावनासे भर दिया है। लोगोंका यह क्रोध और विरोध समझमें आ सकता है। लेकिन अुनके मनमें गड़बड़ी पैदा हो सकती है और गड़बड़ीके कारण किसी सही निर्णय पर नहीं पहुंचा जा सकता। अिसलिअे अिस प्रश्न पर हमें गंभीरतासे और शान्त चित्तसे अुसके सारे पहलुओंको दृष्टिमें रखकर विचार करना चाहिये।

श्री नेहरूने कहा, "हमारा पहला विचार अुन लोगोंको अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करनेका होना चाहिये, जिन्होंने गोआकी स्वतंत्रताके ध्येयके लिअे अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी या बड़े-बड़े त्याग किये हैं। अिसमें गोआके लोग और भारतके लोग दोनों शामिल हैं। यह याद रखना चाहिये कि गोआनिवासी पुर्तगालकी औपनिवेशिक हुकूमतके अत्याचारोंसे अपने-आपको मुक्त करनेके प्रयत्नमें पिछले कअी वर्षोंसे कष्ट भोगते रहे हैं।"

"अिस अदम्य साहसके ताजे अुदाहरणोंका हमारे लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था — वह साहस जो मृत्युको निकट देखकर भी कमजोर नहीं पड़ा। अिन बहादुर सत्याग्रहियोंके अवसानसे शोकसंतप्त होना हमारे लिअे स्वाभाविक है; लेकिन मैं कहूंगा कि यह अवसर हमारे लिअे आनन्द और गौरवका भी है, क्योंकि हमारे देशके बहुतसे स्त्री-पुरुषोंने यह अूंचा अुदाहरण हमारे सामने रखा है। केवल शोक मनानेके बजाय अिस पहलू पर भी हम भार दें। मौत तो कभी न कभी हम सबके पास आती ही है, लेकिन अिस बातसे बहुत बड़ा फर्क पड़ जाता है कि मौतका सामना हम कैसे करते हैं। जो हिम्मत मौत पर विजय पा लेती है वही टिकती है और हमारे सामने अैसा अुदाहरण रखती है, जो हमें पहलेसे ज्यादा अच्छे बना देता है।"

श्री नेहरूने कहा कि भारतके लम्बे अितिहासमें कअी आक्रमण हुअे और कअी अुतार-चढ़ाव आये, लेकिन सार्वभौम सत्ता भारतके भीतर ही रही। भारतमें ब्रिटिश, फ्रेंच और पुर्तगाली शासन कायम होने पर पहली बार भारतके राजकाजका संचालन बाहरसे होने लगा। अिसी अुपनिवेशवादने भारतको अितिहासमें पहली बार दूसरे देशके अधीन बना दिया। ब्रिटिश सत्ता भारतमें प्रधान हो गअी और फ्रेंच तथा पुर्तगाली भूभाग छोटे-छोटे टुकड़ोंके रूपमें रह गये। ये टुकड़े ब्रिटिश सत्ताके संरक्षणके कारण भारतमें बने रहे। वे फ्रेंच भारत और पुर्तगाली भारत कहे जाते रहे।

www.vinoba.in

श्री नेहरूने आगे चलकर कहा, "राष्ट्रीय आन्दोलनका मुख्य हेतु बाहरी सत्ताका यानी पराधीन देश पर दूरकी औपनिवेशिक सत्ताके शासनका अन्त करना था। जहां तक ब्रिटिश भारतका सवाल था, यह ध्येय शांतिपूर्ण ढंगसे सिद्ध हो गया। बादमें फ्रेंच भारतके सम्बन्धमें भी यह हेतु शांतिपूर्वक और बातचीतके जरिये अनिवार्य रूपमें सिद्ध हो गया। अब बाहरी सत्ताके अधीन भारतका वही हिस्सा बचा है, जो पुर्तगाली भूभाग कहलाता था। यह साफ है कि वहां दूर स्थित पुर्तगालका शासन और सार्वभौम सत्ता है। यह राष्ट्रवादकी संपूर्ण कल्पना और आधुनिक युगकी भावनाके खिलाफ है।

"यहां मैं यह नहीं बता सकता कि गोआमें परिस्थिति क्या रूप लेगी या हम आगे क्या कदम अुठायेंगे। लेकिन अितना मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि जहां तक हमारी सरकारका सवाल है, वह अुसी मूल नीति पर चलेगी, जो हमने तय की है और हम पुर्तगाली शासनसे गोआको मुक्त करनेका ध्येय अपने सामने रखेंगे। अिसमें मुझे जरा भी शक नहीं कि हम अपना यह ध्येय अवश्य सिद्ध करेंगे।"

श्री नेहरूने १५ अगस्तके दिन हुअे गोआ सत्याग्रहका जिक्र किया और कहा, "यह जाहिर है कि हमारी सरकार दूसरी सरकारके खिलाफ सत्याग्रह नहीं कर सकती। लेकिन व्यक्तियों या दलोंको सत्याग्रह करनेका अधिकार है, बशर्ते अुसके अैसे कोअी नतीजे न आयें जो फौजी संघर्षको जन्म दें। बेशक, गोआमें या गोआके बाहर रहनेवाले गोआनियोंका यह अधिकार है कि वे गोआकी मुक्तिके लिअे सत्याग्रह करें। अ-गोआनियोंको भी सिद्धान्तमें अिस सत्याग्रहसे रोका नहीं जा सकता। लेकिन अगर अिस सत्याग्रहको फौजी कार्रवाअीकी पूर्वभूमिका माना जाय, तो यह सत्याग्रह नहीं रह जाता, और कुछ भले हो। अिसके अलावा, भारतीयों द्वारा सामूहिक सत्याग्रह करनेकी बातको हमने निरुत्साहित किया, क्योंकि अुससे न केवल अवांछनीय परिस्थितियां और नअी अुलझनें खड़ी होतीं, बल्कि अिस समस्याके प्रति हमारे दृष्टिकोणके बारेमें दूसरे देशोंके लोगों पर गलत छाप पड़ती।

"अिस सम्बन्धमें जिन बहुतसे गोआनियों और भारतीयोंने सत्याग्रह किया, अुनके साहसकी हमें प्रशंसा करनी चाहिये, लेकिन साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिये कि अिस सत्याग्रहके बहुतसे हिमायतियोंको सत्याग्रहके अर्थकी कोअी स्पष्ट कल्पना नहीं है। वे सत्याग्रहके साथ पुलिस कार्रवाअीकी भी बात करते हैं, मानो अिन दोनोंका आपसी सम्बन्ध हो।"

श्री नेहरूने अपनी बात जारी रखते हुअे कहा, "ये दोनों मानसिक और भौतिक दृष्टिसे सर्वथा भिन्न बातें हैं। अिन दोनोंको मिला देनेका अर्थ है भ्रम और निष्फलताको जन्म देना। दूसरे देशोंके लोग सीधी कार्रवाअीकी अिस शान्तिपूर्ण पद्धतिके आदी न होनेके कारण यदि सत्याग्रहका अर्थ न समझ सकें, तो मेरी समझमें यह बात आ सकती है। लेकिन भारतके लोगोंके लिअे तो अिन दो विरुद्ध बातोंको मिला देनेका कोअी बहाना नहीं होना चाहिये, जिन्हें पिछले ३५ बरसोंसे अिस पद्धतिकी तालीम दी गअी है। अगर हम फौजी या पुलिस कार्रवाअीको सही या वांछनीय मानते हों, तो हमें तथाकथित सत्याग्रहकी पूर्वभूमिका तैयार किये बिना अैसा करना चाहिये।"

"गोआमें १५ अगस्तकी दुःखद घटनाओंके बाद भारतके लोगोंकी भावनाअें अुत्तेजित होना स्वाभाविक था। सारी दुनिया अिस मामलेमें भारतीय पुण्य प्रकोपकी गहराअी और तीव्रताको देख सकी है। लेकिन अैसे बड़े प्रदर्शन अक्सर दूसरी ही दिशा पकड़ लेते हैं और अनुशासनबद्ध शक्ति और सहानुभूतिके प्रदर्शनके बदले हम देखते हैं कि लोगोंकी अुच्छृंखल भीड़ कभी-कभी दूसरोंके साथ बुरा व्यवहार करती है और अुन्हें अपनी पसंदका काम करनेके लिअे मजबूर करती है! यही हाल अिस मामलेमें भी हुआ। लोगोंका यह व्यवहार सत्याग्रहसे कोसों दूर था। बड़े दुर्भाग्यकी बात है कि अिसने अुन लोगोंके अदम्य साहस द्वारा पैदा किये हुअे भारी असरको कम कर दिया है, जिन्होंने पुर्तगाली हुकूमतका शान्तिपूर्ण विरोध करनेमें अपने प्राण निछावर कर दिये।"

"अिसलिअे, कुछ लोग जो अिस आन्दोलनको गलत दिशामें मोड़ना चाहते हैं अुससे हमें सावधान रहना चाहिये। अैसा करना कभी भी बुरा ही होता है, लेकिन आन्तर-राष्ट्रीय प्रश्नोंको हल करनेमें यह बुराअी कहीं ज्यादा बढ़ जाती है। सत्याग्रह शांतिपूर्ण और अहिंसक तथा अनुशासनपूर्ण और निर्भय होना चाहिये। अनुशासनहीनता और अन्यायपूर्ण व्यवहारका सत्याग्रहसे कोअी सम्बन्ध नहीं है। दुर्भाग्य यह है कि कुछ लोग, जो केवल हिंसामें ही विश्वास करते हैं, गलत ध्येयोंके लिअे सत्याग्रहका दुरुपयोग करना चाहते हैं। कांग्रेसका यह फर्ज है कि वह अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहे और क्षणिक अुत्तेजना और क्रोधके आवेशमें न बह जाय। हमें जनताको सही रास्ता बताना है, भले वह लोगोंको प्रिय न हो। हमें अपने आधारभूत सिद्धान्तोंको मजबूतीसे पकड़े रहना चाहिये। अिसी बातने भूतकालमें कांग्रेसको महान बनाया है, और यही चीज भविष्यमें कांग्रेसको और महान बनायेगी।"*

(अंग्रेजीसे)

लोकजीवन और सिनेमा

थोड़े दिनोंसे अखबारोंमें, विशेषकर फिल्मी पत्रोंमें, अेक बड़ी दिलचस्प चर्चा चल रही है। फिल्मवाले बहुत रूठ गये हैं। क्या फिल्मसे संबंध रखनेवाली केन्द्रीय मिनिस्ट्रीको, क्या पार्लियामेन्टके कांग्रेसी सदस्योंको, सबको आड़े हाथों ले रहे हैं। लोग अुन्हें मनाते हैं। पर वे जल्दी कहां माननेवाले हैं?

बात यह है कि पार्लियामेन्टके चौसठ सदस्योंने अेक शिकायत पेश की। शिकायत क्या अपनी अेक शंका जाहिर की। ये भाअी थे सब कांग्रेसवाले। अिसलिअे अुन्होंने अपनी दास्तान कांग्रेस वर्किंग कमेटीके आगे पेश की। कहना अुनका यह था कि आजकलकी फिल्मोंसे लड़के-लड़कियोंके चालचलन पर खराब असर पड़ता है। अब मुल्लाकी दौड़ मसजिद तक। अिसलिअे वर्किंग कमेटीने सरकारसे यानी केन्द्रीय सूचना और रेडियो मिनिस्ट्रीसे कहा कि अिस तरफ ध्यान दिया जाये। यूं तो कांग्रेस वर्किंग कमेटी कोअी जल्दी कदम अुठानेवाली जमायत है नहीं, बहुत धीरेसे कदम बढ़ाती है, — जैसे देखिये गोआका सवाल — लेकिन अिस मामलेमें न जाने क्या हुआ, अुसने जल्दी ही फैसला कर डाला और सूचना मिनिस्ट्रीको ताकीद की कि जरा अेहतियात बरतें — यानी फिल्मोंका सेन्सर ज्यादा सख्तीके साथ करें। कांग्रेसके जनरल सेक्रेटरीने भी अपने चौसठ साथियोंकी शिकायतमें दो लफ्ज और जोड़ दिये। फिर क्या था? फिल्मवाले आगबबूला हो गये।

हिन्दुस्तानके फिल्म फेडरेशनके सभापति तो मानों कबके खार खाये बैठे थे। अुन्होंने अेक लम्बा-चौड़ा बयान दिया। अुसमें तंग नजरवाले पाखण्डियों और सामाजिक प्रतिक्रियाशीलोंको सावधान किया है कि फिल्मोंको बदनाम करनेकी हरकतें छोड़ दें। अुन्होंने कांग्रेस वर्किंग कमेटीके रवैये पर दुःख बताते हुअे कहा कि अुसने फिल्म अुद्योगकी बात सुने बिना ही फिल्म मिनिस्ट्रीको शिकायत लिख भेजकर हमारे साथ नाअिन्साफी की है। फिल्म फेडरेशनके प्रधानका कहना है कि अैसा करनेसे वर्किंग कमेटीने कुछ दलोंको अिस बातका मौका दे दिया कि वे जिस तरह चाहें वर्किंग

* २५ अगस्त, १९५५ के 'हिन्दू' से संक्षिप्त।

www.vinoba.in

कमेटीके लफ्जोंके माने लगायें। अुन्होंने कहा कि पार्लियामेन्टके मेम्बरोंके, सूचना मिनिस्ट्रीके और कांग्रेस वर्किंग कमेटीके अिस कामसे यह बात साफ जाहिर हो जाती है कि सिनेमा अिण्डस्ट्री पर कालिख लगानेकी कुछ लोगोंकी कोशिश लगातार जारी है, और अिस बहाने वे लोग सिनेमाको सरकारी चंगुलमें फंसाना चाहते हैं।

अुन्होंने आगे चलकर यह भी कहा कि चौसठ सदस्योंके अेतराज अुस मिनिस्ट्री पर लानत भेजते हैं, जो फिल्मोंका सेन्सर करती है। फिर अेक बात बड़ी जोरदार कह डाली। वह यह कि अगर कुछ फिल्में अितनी ज्यादा खराब हैं, तो अिसके लिअे मिनिस्ट्रीसे जवाब तलब किया जाये कि अुसने अैसी फिल्मोंको आखिर पास क्यों होने दिया। अगर किसी फिल्मसे शिकायत थी तो हुक्कामी दर्जे पर अुसकी जांच कराअी जानी चाहिये थी। यह न करके सारे फिल्मी अुद्योग पर हाथ साफ करना कहांकी शराफत है?

कांग्रेसके चौसठ संसद सदस्यों और फिल्म-नरेशकी बातें अूपर हमने अपने शब्दोंमें दी हैं और दोनों पक्षोंके कहनेका सार रख दिया है। हमें नहीं मालूम कि सूचना मिनिस्ट्री वाकअीमें कोअी कदम अुठायेगी या नहीं, या फिल्म फेडरेशन-प्रधानके कहनेके मुताबिक तफसीलमें जाकर बाकायदा जांच करायेगी या नहीं। लेकिन हम अितमीनान दिलाना चाहते हैं फिल्म-नेताको कि अुनकी तो पांचों अंगुलियां घीमें हैं। अगर सरकार जांच कराती है तो अुसी पर अेतराज अुठेगा कि अमुक अमुक फिल्मोंके दिखानेकी अिजाजत दे कैसे दी। और अगर जांच नहीं कराती है तो पार्लियामेन्टके मेम्बरोंका कहना न कहना बराबर हो जायगा।

लेकिन फिल्म-अुद्योग और फिल्म मिनिस्ट्रीकी लड़ाअी मियां-बीबीके जैसी लड़ाअी है, जो कभी गरम कभी नरम। अिसमें किसीको पड़नेकी जरूरत नहीं है। न हम पड़ना ही चाहते हैं। मगर हम जरा सार्वजनिक दृष्टिसे अिस मसले पर विचार करना चाहते हैं।

हमने सिनेमाके टिकटघरों पर अैसी भयानक भीड़ और मार-पीट होते देखी है, जो रेलवेके टिकटघरों पर भी नहीं देखी। हमने शहरके नौजवानोंको आपसमें बातें करते सुना है कि किस फिल्मी सितारेने पहले किस खेलमें हिस्सा लिया और किस फिल्ममें कौन कौन हैं। हमने छोटे छोटे लड़कोंको फिल्मी गीत ग़ाते सुना है। हमने सभ्य घरानेके शिक्षित स्त्री-पुरुषोंको अमुक अमुक फिल्मका जिस तड़पके साथ अिन्तजार करते देखा है, अुतनी बेचैनी अुन्हें अपनी औलादके देरसे घर लौटने पर भी मुश्किलसे होती होगी। साथ ही साथ हम शहरमें ही रहनेवाले अैसे परिवारोंको जानते हैं, जो बरसों कोअी खेल देखने नहीं जाते। अिसलिअे हम सिनेमाको शहराती जीवनका अेक लाजमी हिस्सा तो नहीं मगर अेक जबरदस्त हिस्सा जरूर कहेंगे। हम यह भी जानते हैं कि आज हिन्दुस्तानमें कपड़ेकी मिलोंके बाद सबसे बड़ा अुद्योग फिल्मका ही है। और अिस अुद्योगसे सरकारको लाखों करोड़ों रुपयेकी आमदनी होती है। अिसलिअे अिस कारोबारमें सरकारकी भी दिलचस्पी बहुत ज्यादा है।

पता नहीं हमारी आवाज वहां तक पहुंचेगी या नहीं। लेकिन अब हम फिल्म-अुद्योगवालोंसे कुछ निवेदन करना चाहेंगे। हम जानना चाहेंगे कि फिल्म-अुद्योगका कर्तव्य क्या है। क्या अुनका धंधा महज चन्द घंटोंके लिअे लोगोंको घेर कर रुपया कमाना है, या कुछ और भी? क्या अुनका मकसद हिन्दुस्तानके ठाट-बाटदार, पैसा-परस्त, मोटरबाज लोगोंकी जिन्दगीके गीत गाना है, या कुछ और भी? हमारी अपनी दृष्टिसे तो लोकजीवनमें फिल्मका वही स्थान है, जो समाचार-पत्रोंका। अिसलिअे हम मानते हैं कि समाचारपत्रकी तरह फिल्म भी तीन काम करे:

(१) लोगोंको जो चीज प्रिय हो, वह लोगों तक आसानीसे पहुंचाना।

(२) लोगोंके लिअे जो चीज हितकारी हो अुसकी तरफ लोगोंका ध्यान खींचना।

(३) लोगोंको जिस चीजसे तकलीफ पहुंचती हो अुससे दूर रहनेकी लोगोंको ताकीद करना और जिस चीजसे अुन्हें शिकायत हो वह सरकार तक पहुंचाना।

हमारा खयाल है कि अगर किसी देशकी फिल्में केवल पहला काम करती हैं, तो वह वहांकी जनताकी मित्र नहीं शत्रु हैं। ठीक अुसी तरह जिस तरह किसी आदमीका अैसा मित्र, जो अुसकी कमजोरियोंसे फायदा तो अुठा ले मगर अुन कमजोरियोंके दूर करनेमें अपने मित्रकी मदद नहीं करे। मसल मशहूर है कि नादान दोस्तसे दाना दुश्मन बेहतर है। बहुत नम्रताके साथ हम कहना चाहते हैं कि हमारे देशका फिल्म-अुद्योग अभी हमारे नादान दोस्तकी हालतमें है। हमें नहीं मालूम कि आजादीके बाद फिल्मोंने अपने ढंगमें कोअी फर्क किया या नहीं। फिल्में ज्यादा तादादमें तैयार कर लेना, सेंसरकी झंझटोंसे जल्दी मुक्त हो जाना, फिल्म जांच कमेटीकी रिपोर्ट तैयार हो जाना — अगर सिर्फ यही पैमाना है हमारे फिल्म-अुद्योगकी जागृति और अुन्नतिका, तो हमें दुःखके साथ कहना होगा कि वह अभी धोखेमें है और अुसने अपना धर्म पहचाना नहीं।

स्पष्ट शब्दोंमें कहें तो हमें अपना फिल्म-अुद्योग बहुत डरपोक मालूम पड़ता है। वह अेक तरफसे जनताको खुश रखना चाहता है और दूसरी तरफसे सरकारको भी। अुसे हर फिल्मके बनाते वक्त यही फिक्र रहती है कि वह जनताको अच्छी लगेगी या नहीं? और सरकारकी पालिसीके खिलाफ तो नहीं पड़ेगी? अुसे यह फिक्र नहीं रहती कि यह फिल्म जनताके लिअे अच्छी होगी या नहीं? या सरकारकी आंखें खोलेगी या नहीं? सारा फर्क है अच्छी होने और अच्छी लगनेका। मरीजके लिअे कड़वी दवा अच्छी होती है पर अुसे अच्छी लगती नहीं। क्रोधातुर या पागल आदमीको चाकू या छुरी अच्छी लगती है पर अच्छी होती नहीं है। हिम्मतका काम है मरीजको कड़वी दवा पिलाना और पागलसे छुरी छीनना। हमारी समझमें नहीं आता कि हमारी फिल्में अभी तक अैसी हिम्मत क्यों नहीं दिखातीं।

जरा और साफ साफ कहें तो हमें कबूल करना पड़ेगा कि अभी तक हमारी फिल्में देशका जो जीवन है अुससे अछूती हैं। देशका जीवन माने देशके दुखिया और सुखियाका जीवन। दूसरे शब्दोंमें, हमारी फिल्में सुखियाके जीवनकी झांकी देती हैं, पर न दुखियाकी और न भुखियाकी। फिर, देहातके जीवनसे तो वे और भी ज्यादा कोसों दूर हैं। अगर अंग्रेजी राजके जमानेसे या अुसके पहलेसे देशमें बेकारीका सिलसिला बढ़ा है, देशमें बीड़ी-सिगरेट, चायका अिस्तेमाल फैला है, देशमें स्त्री-व्यापार और चोरी-डकैतीने तरक्की की है, देशमें नंगे-भूखोंकी तादाद बढ़ी है, तो फिल्में अुसे क्यों नहीं पेश करतीं और अुस तरफ जनता व सरकारका ध्यान क्यों नहीं खींचतीं? हां, अगर फिल्म-अुद्योग अिन सब चीजोंको हितकर मानता हो, तब तो बात ही दूसरी है। अगर लोगोंको खुद हाथसे काम करना चाहिये, अगर हर पढ़े-लिखेको भी शरीर-श्रम करना चाहिये, अगर छुआछूत खतम होनी चाहिये, अगर भंगीका पेशा या तो मिटना चाहिये या सार्वजनिक बनना चाहिये, अगर लोगोंको अपने घरकी या प्रदेशकी या देशकी बनी चीजें अिस्तेमाल करनी चाहिये, तो फिल्में क्यों नहीं अिस तरहकी प्रेरणा देतीं? अगर सरकारी तनख्वाहोंमें जमीन-आसमानका भेद मिटना चाहिये, अगर दफ्तरोंमें साहब-मुलाजिमका ढंग बदलना चाहिये, अगर

www.vinoba.in

घूसखोरी और पुलिसकी ज्यादतियोंको खतम होना चाहिये, तो फिल्में क्यों नहीं अिस तरफ कदम बढ़ातीं? क्या घरकी देवीको चूल्हेकी देवी और अपने स्वामीकी दासी बनकर रहना चाहिये, क्या हमारी बहनोंको अपना बदन जेवर लादकर सदा भयभीत रहना चाहिये, क्या हमारे भाअियोंको शादियोंमें हजारोंका दहेज लेना चाहिये? अगर नहीं तो फिल्मवाले क्यों नहीं सबको चौकन्ना कर देते?

हम थोड़ेमें ही संतोष करेंगे। हम सिर्फ यही पूछना चाहते हैं अपने फिल्मी भाअी-बहनोंसे कि क्या आजकी-सी फिल्में दिखाकर देशवासियोंको सच्चे और बहादुर, निडर और नम्र बननेकी प्रेरणा मिलेगी? क्या अिन फिल्मोंके अनुसार आचरण करने पर हम बाहरी शत्रुओं या भीतरी संकटोंका शानके साथ सामना कर सकेंगे? क्या अिन फिल्मोंसे आजके नौजवानमें यह अुमंग पैदा हो रही है कि मैं आजाद मुल्कका आजाद अिन्सान हूं और यह आजादी मैं किसी कीमत पर भी बेचनेको तैयार नहीं हूं? या क्या अुसमें यह लालसा पैदा होती है कि मैं देशके दीनसे दीन और दुःखीसे दुःखी लोगोंकी सेवामें अपना जीवन अर्पित कर दूं?

अेक निवेदन और। हर फिल्ममें संगीत रहा करता है। अिस संगीतमें गाने कौनसे रहते हैं? हम नहीं कहते कि ये गाने ज्यादातर खराब होते हैं। लेकिन हम पूछना चाहते हैं कि हिन्दीकी जो बेमिसाल धरोहर है — संत-साहित्य — अुसका अुपयोग क्यों नहीं किया जाता? हमारे अिस अनमोल खजानेको लूट कर फिल्मवाले क्यों नहीं अिसे बच्चे बच्चे तक पहुंचा देते? क्या कबीर, तुलसी, नानक, दादू, सूर, रहीम, मीरा आदिके पद अिस लायक नहीं कि फिल्मोंमें अुनको शामिल किया जावे और अिस तरह यह अनोखे हीरे–जवाहर घर-घर पहुंचाये जायें? संतोंकी अिस वसीयतको ठुकरा कर नये नये भजन-गीत तैयार करनेमें समय व शक्ति नष्ट करना कहांकी अक्लमन्दी है? क्या अिस साहित्यमें कोअी भी चीज हमारे कामकी नहीं रह गअी है?

अिन सब बातों पर हमारे फिल्मी बंधुओंको विचार करना पड़ेगा। वह जनताकी अठखेलियोंके साथ खिलवाड़ हमेशा ही नहीं कर सकते। जैसा हमने अूपर कहा, जो चीज जनताको प्रिय हो वह भी देना चाहिये। लेकिन केवल वही चीज नहीं। मनोविनोदकी भी सीमा होती है। फिल्म केवल मनोविनोदका साधन नहीं, मन-बलन्दीका भी साधन बनना चाहिये। अच्छी फिल्म तो अच्छा अुपन्यास और अच्छा नाटक दोनों है। यानी फिल्मकी पहुंच कलाकी किसी भी दूसरी कृतिसे कहीं ज्यादा दूरकी और गहरी है। कहा जाता है — जहां न जाये रवि वहां जाये कवि। हम आगे बढ़कर कहेंगे कि जहां न जाये कवि वहां जाये चित्र-छवि। और अच्छी चित्र-छवि या सिनेमा वही माना जायगा जो लोगोंको स-नेमा बना दे, जो अुनको यम-नियमका पाबन्द बनाकर अुनको सुन्दर और अुच्चतर मनुष्य बना दे। परम पितासे हमारी प्रार्थना है कि अपने फिल्म अुद्योगवाले भाअी-बहनोंकी हर सत्-कामना पूरी करे।

सुरेश रामभाअी

सर्वोदय

लेखक: **गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा**

कीमत २–८–० डाकखर्च ०–१२–०

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–१४

कपड़ा-अुद्योगके लिअे योजना

अपने देशकी परिस्थितिको देखते हुअे अैसा लगता है कि अपने गांवोंके गौरव और स्वातंत्र्य, दोनोंको सुरक्षित रखना हो तो अुन्हें अपनी जीवनकी आवश्यकताओंमें स्वावलंबी होना चाहिये। लेकिन अिसके बावजूद विदेशी शासन-कालमें हमारे यहां कपड़ा-अुद्योगका विकास अलग ढंग पर हुआ और अुसका बहुत ज्यादा केन्द्रीकरण हो गया है। फलतः गांवोंका प्रमुख अुद्योग नष्ट हो गया है और बेकारी तथा अर्ध-बेकारी बहुत फैल गअी है।

अभी हमारे यहां अपने अुपयोगके लिअे ५७६ करोड़ गज और निर्यातके लिअे ८० करोड़ गज कपड़ेकी मांग है। अिसमें से मिलोंके जरिये ५०० करोड़ गजका अुत्पादन होता है, जिसमें जीविका तो केवल ७ से ८ लाख तक लोगोंको ही मिलती है।

अिसलिअे दूसरी पंचवर्षीय योजनामें शामिल करनेके लिअे अखिल भारत ग्रामोद्योग बोर्डने कपड़ेके अुत्पादनकी अेक नयी योजना तैयार की है, जिससे बेकारीका बड़ा प्रश्न हल हो सकेगा और अिस अुद्योगका विकेन्द्रीकरण भी होगा।

बोर्डकी मान्यताके अनुसार १९६०-६१ में, यानी दूसरी पंचवर्षीय योजनाके अन्तमें देशके अन्दर कपड़ेका अुपयोग बढ़कर ७२० करोड़ गज हो जायगा और निर्यात भी १०० करोड़ गज हो जायगा। अिस तरह कुल ८२० करोड़ गज कपड़ा अुत्पन्न करना होगा।

अिस ८२० करोड़ गज कपड़ेके अुत्पादनके लिअे बोर्डने नीचे लिखे अनुसार बटवारा किया है: मिलें अिस समय ५०० करोड़ गज कपड़ा अुत्पन्न करती हैं और यंत्र-करघे २० करोड़ गज अुत्पन्न करते हैं; दोनोंका यह अुत्पादन चालू रहे। हाथ-करघों पर अभी १३३ करोड़ गज कपड़ा बुना जाता है, अुसे बढ़ाकर १५० करोड़ गज किया जाय। अुसी तरह अभी खादीका अुत्पादन ३ करोड़ गज है, अुसे बढ़ाकर अगले पांच वर्षमें १५० करोड़ गज किया जाय।

अैसा करनेके लिअे जरूरी नीतिके तौर पर निम्नलिखित सूचनायें की गयी हैं:

(१) मिलोंकी मौजूदा अुत्पादन-शक्तिकी वृद्धि पर रोक लगाना।
(२) यंत्र-करघोंकी अुत्पादन-शक्तिकी वृद्धि पर रोक लगाना।
(३) मिलोंकी सूत कातनेकी शक्ति पर रोक लगाना।
(४) हाथ-करघोंकी कुल अुत्पादन-शक्तिका अभी ३३·३% ही अुपयोगमें आता है, अुसके बजाय ६६·६% का अुपयोग करना।
(५) ४० करोड़ रतल अतिरिक्त सूतकी मांग पूरी करनेके लिअे देशभरमें १७ लाख अम्बर चरखे दाखिल करना।

टेक्सटाअिल अिन्क्वायरी कमीशनके मतानुसार देशमें २१.९ लाख हाथ-करघे हैं और अुनसे १५ लाख मनुष्योंका निर्वाह होता है। पर ग्रामोद्योग बोर्डके मतानुसार देशभरमें ज्यादा नहीं तो २५ लाख हाथ-करघे हैं और अुनसे ३७.५ लाख मनुष्योंका निर्वाह होता है।

अिसके सिवा हाथ-करघे पर रोज ६ गजके हिसाबसे वर्षमें ३०० दिन काम करके ये करघे कुल ४५० करोड़ गज कपड़ा तैयार कर सकते हैं। लेकिन बोर्डके मतानुसार वे अभी केवल १४० करोड़ गज कपड़ा ही बनाते हैं और अुनकी सहायताके लिअे जो प्रयत्न किये गये हैं, अुनके परिणाम-स्वरूप यह अुत्पादन १९५५-५६ में बढ़कर १५० करोड़ गज हो जायगा। अिस तरह

www.vinoba.in

अुनकी अुत्पादन-शक्तिके ३३.३ % का ही अुपयोग किया जा सकेगा। परन्तु यहां तक तो वे मिलके सूतका ही अुपयोग करेंगे।

अिस विषयमें यहां यह अुल्लेखनीय है कि हाथ-करघोंकी प्रायः ६६% अुत्पादन-शक्तिका अुपयोग करनेके लिअे जो लगभग ४० करोड़ रतल सूत चाहिये अुसकी प्राप्तिके लिअे टेक्सटाअिल अिन्क्वायरी कमेटीने ३६ करोड़की पूंजी लगाकर सूत पैदा करनेवाली अतिरिक्त मिलें स्थापित करनेकी सूचना की है!

अिसके खिलाफ ग्रामोद्योग बोर्डने हाथका सूत पैदा करनेकी योजना की है। अुसके लिअे अुसने हाथसे चलनेवाले १२ से ४० अंक तकका सूत कातनेवाले चार तकुओंसे युक्त १७ लाख अम्बर चरखे स्थापित करनेकी सूचना की है, जिसमें केवल १५.५ करोड़ रुपयेकी पूंजी लगेगी!

अिस अम्बर चरखेके द्वारा देशमें ३४.४ लाख कातने और पींजनेवाले प्रतिदिन औसतन् अेक रुपया कमा सकेंगे।

दूसरी पंचवर्षीय योजनामें अभी जो चरखे चल रहे हैं वे तो चलेंगे ही। अम्बर चरखा तो जो लोग कातनेका काम पूरा समय और धंधेकी तरह करना चाहते हैं वे ही चलावेंगे, यद्यपि धीरे धीरे चालू चरखोंकी जगह अम्बर चरखा दाखिल करके अुसे अधिक बढ़ाया जा सकेगा। अभी तो सादे चरखेकी खादीका जो ३ करोड़ गज अुत्पादन होता है अुसे ही बढ़ाकर ५ करोड़ गज कर देना है और अुसे पांच वर्ष तक चालू रखना है।

अूपर बताये अनुसार कपड़ा अुत्पन्न करनेके बाद भी अुसे बेचनेका प्रश्न तो खड़ा ही रहता है। अम्बर चरखेको दाखिल करनेके बाद भी अेक ही अर्ज और अंकके मिल-कपड़े और खादीमें प्रतिगज बारह आनेका फर्क रहता है। अिसलिअे मुक्त बाजारमें हाथ-करघेके अथवा अम्बर सूतके कपड़ेको टिकाना हो, तो प्रतियोगिता न होने देना जरूरी है और यह सारे देशके हितमें योग्य कीमत-नीतिको अपनाकर ही किया जा सकता है। दूसरी तरह कहें तो अेक सामान्य अुत्पादन कार्यक्रमका सफल अमल कपड़ा-अुद्योगकी सारी शाखाओंको नियंत्रणमें रखनेवाली सामान्य कीमत-नीतिके अूपर आधार रखता है और यह कीमत अिस तरह निश्चित की जानी चाहिये कि खादी सस्तीसे सस्ती बिके और आबकारी जकातके जरिये मिलके कपड़ेकी कीमत अूंची की गअी हो।

अिस कीमतको तय करनेके लिअे बोर्डने अेक कपड़ा-अुद्योग कीमत-समितिकी भी सूचना की है। समितिमें अिस अुद्योगकी विविध शाखाओंके प्रतिनिधि होंगे और वे आपसमें चर्चा तथा समझौतेके द्वारा कीमत निर्णय करनेका कार्य करेंगे।

कातने और धुननेवालोंकी तालीमके लिअे अम्बर चरखा और चालू खादीकी अिस सारी योजनाके पीछे सब मिलाकर ५१.७३ करोड़ रुपये खर्च होनेका अन्दाज है। अुसके द्वारा कुल ४९ लाख व्यक्तियोंको पूरे समयका काम दिया जा सकेगा; और चालू चरखे पर रोजकी २ लच्छियोंके हिसाबसे सालमें १५० ही दिन कातनेवाले व्यक्तियोंको भी साथमें गिनें, तो अैसे ४०.१ लाख कातनेवालोंको भी रोजी मिल सकेगी। अिस तरह कुल ८९ लाख मनुष्योंको रोजी देनेकी और अुसके द्वारा लगभग चार अरब रुपयोंकी आय बांटनेकी शक्यता है।

कपड़ा-अुद्योगका विकास अिस तरह नये मार्गसे किया जाय तो ही अपने देशमें आम जनताकी बेकारी और अर्ध-बेकारीका प्रश्न हल करना आसान होगा।

२०-८-'५५ वि०
(गुजरातीसे)

शराब बनाम दूध

रूटरके लन्दनसे भेजे हुअे १२ अगस्तके अेक समाचारमें नीचेकी ध्यान देने लायक बात कही गअी है:

"ब्रिटिश नाविक, जो अत्यधिक मात्रामें शराब पीनेके लिअे मशहूर हैं, अब शराबके बदले दूध पीने लगे हैं।

ब्रिटिश सेना और शाही हवाअी सेनाके कर्मचारी शराबके बदले अक्सर चाय, कॉफी और नीबूका शरबत पीते हैं।

फौजियोंकी शराब पीनेकी आदतमें यह 'भारी परिवर्तन' अुस नयी जांचसे प्रकट हुआ है, जो लगभग सारे फौजी कैन्टीन चलानेवाले अेक संगठन द्वारा की गअी थी।

अिन कैन्टीनोंमें ५० साल पहले ९५ प्रतिशत शराबकी बिक्री होती थी। जांचका कहना है कि अब शराबकी बिक्री ५ प्रतिशत रह गअी है।

अेक जांच प्रवक्ताने कहा कि हवाअी सेनाके लिअे दूधकी बिक्रीमें आश्चर्यजनक वृद्धि हो गअी है। 'दूसरी दो सेनाओंमें शराबकी जगह चाय, कॉफी और दूसरे मृदु पेयोंका प्रचार तेजीसे बढ़ रहा है।'"

हमें मालूम हुआ है कि फ्रान्समें भी सार्वजनिक जीवनमें काम करनेवाले प्रमुख लोगों द्वारा जनताको शराबघरोंमें जानेके बजाय दूधघरोंमें जानेके लिअे प्रोत्साहित करनेका जाग्रत प्रयत्न किया जा रहा है।

अगर ये देश, जो शराबके घर कहे जा सकते हैं, बदल रहे हैं, तो भारतको तो अिस दिशामें जल्दी ही हिम्मत दिखानी चाहिये, शराब पर रोक लगानी चाहिये और अैसा तुरन्त करना चाहिये। और सरकारोंको शराब वगैरा नशीले पेयोंका अुत्पादन और बिक्री बन्द करके गायकी रक्षाके लिअे और अधिक तीव्र प्रयत्न करना चाहिये तथा अधिक मात्रामें दूधकी प्राप्तिको निश्चित बनाना चाहिये। अिससे न केवल धनकी ही प्राप्ति होगी, बल्कि स्वास्थ्य और सुखकी भी प्राप्ति होगी। तभी हम अिस बातकी सचाअीको समझेंगे कि गाय वस्तुतः भारतमें हमारी समृद्धिकी जननी है।

३१-८-'५५ म० प्र०
(अंग्रेजीसे)

शराबबन्दी क्यों?

भारतन् कुमारप्पा

कीमत ०-१०-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
हम युद्धका आश्रय नहीं लेंगे	जवाहरलाल नेहरू	२१७
गोआका स्वातंत्र्य-युद्ध और गांधीजी		२१७
युद्ध और शान्ति-कालमें सेनाके कार्य	मगनभाई देसाई	२१८
नौजवानोंमें अनाचार	मगनभाई देसाई	२१९
गोआका प्रश्न		२२०
लोकजीवन और सिनेमा	सुरेश रामभाअी	२२१
कपड़ा-अुद्योगके लिअे योजना	वि०	२२३
टिप्पणियां :		
भाषायें और भारतीय अेकता		२२६
शराब बनाम दूध	म० प्र०	२२४

www.vinoba.in